सिंड्रेला

अनवर सज्जाद

कभी वह सोचती उसकी उम्र एक लम्हा है, कभी वह सोचती उसकी उम्र सौ साल है। कभी वह सोचती वह उम्र की क़ैद में नहीं या शायद अभी उसे जनम लेना है।

वह उस कमरे में सदा से क़ैद थी और इस उम्मीद में थी कि कोई आए और उसे इस गर्भ से जनवाये। फिर वह सोचती कोई कब उसे जनवाएगा। उसे ख़ुद ही कोई उपाय करना होगा। इस गर्भ से मर कर निकले तो क्या निकले ! वह चुपके से दरवाज़ा खोलकर बाहर देखती। बाहर दरवाज़े के सामने एक भारी-भरकम ख़ूनी कुत्ता ज़ुबान निकाले हाँफता हुआ वहशी मक्कार नज़रों से देखता; जो अनादिकाल से वहाँ खड़ा था। वह कुत्ते को पुचकारने की कोशिश करती। कुत्ता ख़ूँख़ारी से भौंकता, क़दम उठाता। वह पिछले पैर पलटकर झट से दरवाज़ा बन्द कर देती। कुत्ते के भूँकने से माँ को पता चल जाता कि उसने फिर कोई गड़बड़ करने की कोशिश की है। वह अपनी बेटियों के साथ आती, कुत्ते को थपकी देती और कमरे में दाख़िल होकर बग़ैर कुछ कहे-सुने उसकी ख़ूब पिटाई करती। जाते हुए उसकी बहनें कई गज़ उलझी हुई ऊन उसके सामने डाल देतीं और माँ ग़ुर्राती, कि जब तक ऊन की गुँजलकें नहीं खुलतीं, उसे खाना नहीं मिलेगा। उसकी आँखों के तमाम आँसू सूख जाते। वह ऊन सुलझाने लगती और खिड़की के बाहर खुले आसमान की तरफ़ देखने लगती।

उसकी माँ सौतेली थी और बहनें भी सौतेली।

उसकी माँ उसके पैदा होते ही मर गई थी और उसका बाप उसकी पैदाइश के एक साल बाद। उसने अपने सगे माँ-बाप

के बारे में कभी नहीं सोचा था। उसका तसव्वुर बहुत महदूद था। उसकी दुनिया यही कमरा थी, जिसमें उसने आँख खोली थी। बचपन में जो औरत मुस्करा के देखती थी, उसकी माँ थी। जो शख़्स उसके सर पर हाथ रखता था, उसका बाप था। फिर यह सब मुस्कराहटें और हमदर्दी भरे हाथ सिमट-सिमटाकर सौतेली माँ, बहनों और ख़ूँख़ार कुत्ते के वजूद में ग़ायब हो गए थे।

उसने एक-दो मर्तबा कमरे की खिड़की से भी भागने की कोशिश की थी, पर जाने उस बैरी कुत्ते को कैसे ख़बर हो जाती कि ज्यों ही वह खिड़की की दहलीज़ पर पैर रखती, वह कुत्ता बाहर खिड़की के नीचे ज़ुबान निकाले वार्निंग की नज़रों से खड़ा हाँफ रहा होता। वह बेबस होकर फिर कमरे में उतर आती और घुटनों में सर देकर रोने लगती। कभी-कभी खिड़की से एक कंकड़ आकर पैरों में गिरता। वह अपने मैले दुपट्टे के पल्लू से आँखें पोंछती, सीने में उठते तूफ़ान का गला घोंटती। वह कंकड़ उठाती, कोने में पड़े उसी क़िस्म के बहुत-से कंकड़ों में रख देती और सोचती :

नहीं, मैं खिड़की में नहीं जाऊँगी।

न चाहने के बावजूद वह दीवार की ओट में होकर खिड़की से सड़क के पार सब्ज़ दरख़्त के नीचे खड़े उस दीवाने को देखती, जो सुर्ख़ चादर ओढ़े टकटकी लगाये उस खिड़की की तरफ़ देखता मुस्कराता रहता था।

यह सुर्ख़ चादरवाला दीवाना भी अजनबी शख़्स था। गंजा सर, छोटी-छोटी आँखें, छिदरी दाढ़ी, नाटा क़द। सब्ज़ दरख़्त के नीचे गोल्डमुहर का बहुत बड़ा फूल लगता था। उस इलाक़े के लम्बे तड़ंगे लड़के जुल्फ़ें बिखराये, कमर से गिरती पतलूनें पहने, कोकाकोला पीते हुए उसे छेड़ते। आवाज़ें कसते, पत्थर मारते, लेकिन यह दीवाना बस मुस्कराता रहता था। लड़के ख़ुद भी हारकर चले जाते। लेकिन कभी वह बहुत तंग आ जाता तो ज़ख़्मी शेर की मानिंद इस ज़ोर से नारा लगाता कि ज़मीन और आसमान दहल जाते और शरारती लड़के अपनी कोकाकोला वहीं छोड़कर भाग जाते। फिर वह दीवाना आसमान फाड़ती आवाज़ में गीत गाता। वहाँ के नंग-धड़ंग, फूले पेटवाले बच्चों को जमा करता और कमर से बँधे थैले से रेवड़ियाँ और मिठाइयाँ निकाल के बाँटने लगता।

वह अपने होंठों की पपड़ियों पर सूखी ज़ुबान फेरती सोचने लगती, यह ख़ुद पत्थरों का शिकार है, मेरी मदद कैसे कर सकता है।

यह दीवाना भी सदा से वहीं था और उसकी ज़िन्दगी की हक़ीक़तों का एक हिस्सा था। उसे इसके अलावा और कुछ पता नहीं था कि वह दीवाना है। लड़कों से पत्थर खाकर बच्चों में रेवड़ियाँ बाँटता है। उसकी आवाज़ बेहद सुरीली है। दहाड़ सौ शेरों जितनी...और जब उसके चारों तरफ़ अँधेरे छा जाते हैं, तो एक टिमटिमाता

हुआ कंकड़ उसके पैरों में आ गिरता है। वह सीने में उठते तूफ़ान का गला घोंट देती है: नहीं, नहीं, मैं खिड़की से नीचे पैर रखूँगी तो ख़ूँखार कुत्ता मेरी तिक्का-बोटी कर देगा। लेकिन यह ख़ुद खिड़की फलाँग के यहाँ क्यों नहीं आ जाता? इसे क्या पता, मैं किस हाल में हूँ। नहीं, उसे मुझमें उतनी दिलचस्पी नहीं। या वह यह चाहता है कि मैं ख़ुद हिम्मत करूँ। लेकिन अगर किसी तरीक़े से मैं उस तक पहुँच भी जाऊँ तो क्या फ़र्क़ पड़ेगा। दीवाना है, फ़क़ीर है, मुझे मेरी माँ-बहनों से कपड़े कहाँ से लाकर देगा ? मुझे रेवड़ियाँ अच्छी नहीं लगतीं। मगर यह है कौन और सदा टकटकी लगाये खिड़की की तरफ़ क्यों देखता रहता है ? वह चाहती भी, तो कुछ नहीं जान सकती थी। वह चाहती भी, तो कुछ बता नहीं सकती थी, क्योंकि उसकी माँ सौतेली थी, बहनें सौतेली थीं और वहाँ से निकलने के हर रास्ते पर ख़ौफ़नाक कुत्ते का पहरा था। उस कुत्ते से उसकी जान जाती थी। जब वह चोरी-छुपे कुछ खाने लगती, तो वह कहीं से आन मौजूद होता। जब वह अपनी बहनों के कपड़े चुराकर पहनने की ख़्वाहिश करती तो उस कुत्ते की साँस उसकी हर ख़्वाहिश पर छा जाती। हर क़िस्म की क़ैद से फ़रार होने के हर रास्ते पर वह ज़ुबान निकाले, हाँफता हुआ, वहशी मक्कार नज़रों से देखता खड़ा होता।

उसकी माँ और बहनें हर वक़्त तड़क-भड़कवाली पोशाक पहने रहती थीं। अक्सर उनके घर मेहमान आते रहते थे। हर रात वो ख़ुद कहीं न कहीं दावत पर चली जातीं। उसे किसी से न मिलने दिया जाता। मेहमानों के आने से पहले उसे सारे घर को शीशे की तरह चमकाना पड़ता। उसकी माँ और बहनें बनने-सँवरने में मस्रूफ़ होतीं। जब घर में मेहमानों के क़हक़हे गूँजने लगते तो वह बावर्चीख़ाने में बन्द होकर बर्तन धोने लगती। रात को जब वे चले जाते तो वह थकी-टूटी अपने कमरे में आ जाती। तन्हा बैठकर उलझी ऊन को सुलझाने लगती और न चाहने के बावजूद कभी-कभी कंकड़ का इन्तज़ार करने लगती।

अनादि काल से उसकी यही ज़िन्दगी थी।

फिर, एक रात उसकी माँ और बहनें हमेशा की तरह किसी दावत पर गई थीं और वह अपने कमरे में बैठी दिल बहलाने के लिए उन कंकड़ों को गिन रही थी, तो उसका नीमरौशन कमरा एकाएक जगमगा उठा। उसने चौंककर खिड़की की तरफ़ देखा। बहुत तेज़ रौशनी थी। बाहर कार के इंजन की आवाज़ आ रही थी। नहीं, वह नहीं हो सकता। वह घुटनों के बल, लड़खड़ाते दिल को सम्भालती, खिड़की के पास गई। ओट से देखा—एक शानदार लम्बी काली कार खड़ी थी। एक ख़ूबसूरत नौजवान काला सूट पहने उतरा और टाई को ठीक करता उसकी खिड़की के पास क़रीब आ गया।

"तुम हो ?" उसने फुसफुसाकर कहा।

"तुम आ गए, तुम आ गए ! मुझे अनादि काल से तुम्हारा इन्तज़ार था।"

उसने दीवार के साथ सर लगाकर आँखें मूँद लीं। फिर एकदम घबराकर इधर-उधर देखा। कुत्ता कहीं नहीं था।

"तुम हो ?"

"हाँ।" लफ़्ज़ उसकी ज़ुबान से फिसल गया।

"गुड !"

वह खिड़की फलाँग के अन्दर आ गया।

"नहीं नहीं, तुम चले जाओ यहाँ से। मेरी माँ सौतेली है।"

"घबराओ नहीं, कोई बात नहीं। वह यहाँ नहीं आएगी। लो यह पहनकर दिखाओ।"

नौजवान ने अपनी जेब से बड़ा ख़ूबसूरत जूता निकाला, जिसमें हीरे जड़े थे।

"पहनो।" नौजवान की आवाज़ में हुक्म देने का भाव था।

वह लक़वाग्रस्त-सी हो गई। उसने आवाज़ के जादू के असर में जूता पहन लिया।

"बिलकुल फ़िट है, तुम्हारा ही है।"

"मेरा ?"

"हाँ, तुम्हारा। तुम रात शहज़ादे की दावत से भागते वक़्त छोड़ आई थीं।"

"मैं ?"

"हाँ। तुम्हें याद नहीं, एक परी तुम्हें हमारे शहज़ादे के महल में ले गई थी और तुमने उससे वादा किया था कि..."

"लेकिन वह तो ख़्वाब था।"

"वह ख़्वाब था या नहीं था, मुझे सफ़ाई पेश करने का हुक्म नहीं। चलो, शहज़ादा तुम्हारे इन्तज़ार में बेक़रार है। चलो।"

उसका दिल बल्लियों उछल रहा था। आख़िर हज़ार साल बाद वह दिन आ ही गया, कि उसकी निजात हो गई और वह भी इतने शानदार तरीक़े से, शहज़ादे के हाथों। उसकी माँ और बहनों को पता चला, तो वो मारे हसद के जल-जलकर मर जाएँगी। फिर भी उसने अनजाने ख़ौफ़ से कहा, "लेकिन..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। शहज़ादा तुम्हें इस क़ैद से निजात दिलाकर रहेगा। फिर तुम सारी उम्र उस शानदार महल में रहोगी, जहाँ..."

उस नौजवान ने उसके सामने जन्नत सिरजी।

"अब चलो।"

उसने अपने मैले-कुचैले कपड़ों पर नज़र डाली और नौजवान भाँप गया।

"उसकी फ़िक्र न करो। कार में शहज़ादे का भेजा हुआ लिबास रखा है।"

"मगर वह कुत्ता ?" उसने खिड़की से बाहर झाँका।

नौजवान ने हँसकर खिड़की से बाहर छलाँग लगाई और अपने पैरों की तरफ़ इशारा किया। ख़ूँख़ार कुत्ता मासूम बकरी बना डॉग फ़ूड की दावत उड़ाने में मस्रूफ़ था।

"आओ।" नौजवान ने हुक्म दिया।

वह जन्नत की ख़्वाहिश में खिड़की से उतर आई। नौजवान ने उसके लिए लेमूज़ीन का दरवाज़ा खोला। वह कार में क़दम रखने ही वाली थी कि उसके कानों में आवाज़ आई, न जाना।

उसने चौंककर देखा। पास ही सब्ज़ दरख़्त की ओट में सुर्ख़ चादर वाला दीवाना खड़ा था। उसने घबराकर दीवाने को वहाँ से चले जाने का इशारा किया। दीवाना मुस्कराया : यह कुछ नहीं सुन सकती। इसे कुछ ख़बर नहीं।

उसने नौजवान को देखा, नौजवान दरवाज़ा खोले ख़ामोश खड़ा था। उसकी आँखें मानों जम गई थीं।

उसने फिर फ़ुटबोर्ड की तरफ़ क़दम बढ़ाया।

"न जाना।" दीवाने ने फिर कहा।

"मैं शहज़ादे की जन्नत में जा रही हूँ।"

"फिर वापस न आ पाओगी।"

"तुम्हें इससे क्या ? वह बहुत ख़ूबसूरत है। शहज़ादा है।"

"तो फिर मेरी एक बात मानो, जब वक़्त ठहर जाता है और मरता हुआ लम्हा दूसरे लम्हे में जनम लेता है, उस लम्हे से पहले-पहले लौट आना।"

वह हँसी।

"मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा।"

वह और ज़ोर से हँसी और कार में आकर बैठ गई।

"दीवाना !"

"कौन दीवाना ?" नौजवान ने पूछा।

"तुम नहीं जानते।"

उसने कार के पिछले शीशे से देखा। उसके कमरे से आती मद्धम रौशनी में दीवाना सब्ज़ दरख़्त में गोल्डमुहर का फूल था।

महल में लोगों का हुजूम था। हर रंग, हर नस्ल के लोग थे। गोरे-चिट्टे नीली आँखोंवाले शहज़ादे ने बड़े फ़ख़्र से उसका इस्तक़बाल किया। मेहमानों से तआरुफ़ कराया। उसके पैर ज़मीन पर नहीं थे। वह जन्नत में थी। धीरे-धीरे उसके कानों से आवाज़ ग़ायब हो गई थी, 'उस लम्हे से पहले-पहले लौट आना, जब मरता हुआ लम्हा दूसरे लम्हे में जनम लेता है।' वह बार-बार अपनी कलाई पर बँधी घड़ी को

देखती थी। शहज़ादे ने तंग आकर घड़ी उतार के फेंक दी। साथ ही वह आवाज़ मर गई।

"शुक्रिया।" उसने कहा और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

उसने सोने के बर्तनों में खाना खाया और हीरे-जड़े गिलासों में पानी पिया। उसने ज़िन्दगी में पहली मर्तबा पेट भर के खाना खाया। उसे खाने का नशा इतना चढ़ा कि नाच के लिए शहज़ादे की दरख़्वास्त पर वह मुश्किल से उठी।

हर राउण्ड में शहज़ादा उसे सीने के साथ चिपटा लेता और वह बादलों में उड़ने लगती। बाक़ी सब शहज़ादियाँ दिल ही दिल में कुढ़ती थीं और उसे कोसती थीं।

एक राउण्ड में शहज़ादा उसे सीने से चिपटाये, संगीत की लहरों पर बहता, उसे ख़्वाबगाह में ले आया और वो दोनों निढाल होकर परों के बिस्तर पर गिर पड़े। शहज़ादे ने हाथ लहराकर सोने से भरी तश्तरियों की तरफ़ इशारा किया, "ये सब तुम्हारी हैं।"

"हूँ।" उसने उनींदी आँखों से देखा।

"अब तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहेगी।"

"हूँ।"

"अब तुम मेरी हो।"

जाने शहज़ादे को क्या हुआ, उसने उसका गरेबान पकड़ कर झटका दिया। उसने चौंककर देखा, शहज़ादे के चमकीले दाँत एक-एक करके गिरने लगे। वह घबरा कर उठी। शहज़ादे का भेजा हुआ लिबास रुई का था। शहज़ादा पागलों की तरह रुई नोच रहा था। वह उसके बाज़ुओं में कसमसाई। ठीक उसी वक़्त ख़्वाबगाह का क्लॉक चीख़ा, वक़्त रुक गया है, रुक गया है। लौट आओ, लौट आओ, भागो, भागो। दूसरे लम्हे की पहली साँस से पहले लौट आओ।

उसने अपने आपको छुड़ाते हुए शहज़ादे को देखा, शहज़ादे के बनावटी बालों की विग सर से उतर गई थी। उसकी नीली आँखें किरची-किरची हो गई थीं। उसके दाँत झड़ चुके थे। सिर्फ़ कैनाइंज़ (CANINES) थे, जिन पर ख़ून की सुर्ख़ी थी।

वह उसके पंजों से तड़पकर निकली।

"यहाँ से कैसे जाओगी ?"

शहज़ादा हँसते-हँसते बिस्तर पर दुहरा हो गया। क्लॉक और भी ज़ोर से चीख़ा।

वह अपनी शर्मगाह[1] को हाथों से ढाँपकर दरवाज़े की तरफ़ भागी। दरवाज़ा ख़ुद-ब-ख़ुद खुल गया। वहाँ उसकी सौतेली माँ और बहनें हीरे की जूतियाँ पहने उसकी

1. गुप्तांग

तरफ़ बाँहें फैलाये खड़ी हँस रही थीं। वह दूसरे दरवाज़े की तरफ़ भागी।

दूसरा, तीसरा, चौथा—हर दरवाज़े पर उसकी सौतेली माँ और बहनें बाजू बढ़ाये उसे पकड़ने के लिए खड़ी हैं। वह पागलों की तरह उस जन्नत में चक्कर लगा रही है। शहज़ादे के क़हक़हे क्लॉक की चीख़ों में उलझे उसका पीछा कर रहे हैं और वह हाथों से शर्मगाह छिपाये भाग रही है, भाग रही है।

☆

कपास कहानी

मसऊद अशअर

"कल रात फिर जागती रही ?"

"पेट ख़राब होगा ?"

मेरे मुँह से बे-साख़्ता निकला था। मेरे उस बेहूदा मज़ाक़ का जवाब देना चाहिए था, लेकिन वह ख़ामोश रही और नज़रें नीचे किये बतियाती रही। शायद उसे बुरा लगा था। उसके चेहरे से कुछ ऐसा ही ज़ाहिर हो रहा था। मेरे मज़ाक़ पर उसने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं। चाय के जिस कप में वह चमचा हिला रही थी, उसमें वह इतने ग़ौर से देख रही थी, जैसे चाय के पार उसे कुछ नज़र आ रहा हो। फिर मुझे ख़याल आया कि उसने तो एक बार भी मेरी तरफ़ नहीं देखा था। जब से मैं आया था, वह लगातार किसी और तरफ़ देख रही थी।

मैं क़रीब-क़रीब रोज़ाना उससे मिला करता था। कभी उसके दफ़्तर में, कभी उसके या अपने घर। उस रोज़ पूरे सोलह दिन बाद उससे मिल रहा था।

"मैं सीरियस हूँ।" उसने चाय का कप मेरी तरफ़ बढ़ाते हुए इतनी ख़ुश्क और सूखी संजीदगी के साथ कहा कि मैं डर गया।

"ओह ! आई एम सॉरी।" मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उस कड़वी-कसैली संजीदगी पर क्या प्रतिक्रिया ज़ाहिर करूँ।

"जब से तुम गए हो, मैं बराबर सोच रही हूँ।" उसने अपनी नज़रें और भी नीची करके कहना शुरू किया, "कल रात अचानक एहसास हुआ कि मैं तुमसे...मेरा मतलब है, मैं तुम्हें..." वह ठहरी, मेरी तरफ़ एक नज़र डाली और जल्दी से कह डाला, "आई मीन, आई लव यू।"

"दैट्स बेटर।" मेरे मुँह से बेअख़्तियार यूँ ही निकल